

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 9, वाचा, पुराना नियम और नया नियम, भाग 1

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं जो न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर अपने व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 9 है, वाचा, पुराना नियम और नया नियम, भाग 1।

हमने वाचा की अवधारणा का परिचय दिया है, और अब मैं जो करना चाहता हूँ वह पुराने नियम में वाचाओं का बहुत ही संक्षिप्त सर्वेक्षण करना है ताकि यह देखा जा सके कि वे यीशु मसीह और नए नियम में कैसे पूरी होती हैं, लेकिन शायद एक दूसरे के साथ उनके संबंधों के बारे में बस कुछ संक्षिप्त बातें कहूँ।

हमने जो सवाल उठाया वह यह था कि क्या उत्पत्ति 1 और 2 में कोई वाचा है, और विद्वानों ने इस पर बहस की कि क्या ऐसा था, लेकिन सभी सहमत नहीं थे। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात, बेरिट या वाचा शब्द का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन उत्पत्ति 1 और 2 में वाचा की कई विशेषताएं दिखाई देती हैं, या ऐसे कई संबंध हैं जो सुझाव दे सकते हैं कि कोई वाचा थी। सबसे पहले, अध्याय 9 में बाद में नूह के साथ परमेश्वर की वाचा उत्पत्ति 1 और 2 को याद दिलाती है। हम बाद में उस पर विचार करेंगे, लेकिन जैसा कि हमने पहले ही देखा है, उत्पत्ति 9 में बाढ़ की कहानी और उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि, मूल सृष्टि के बीच कई संबंध हैं।

उत्पत्ति 9 एक तरह से नई रचना या पहली रचना का नवीनीकरण है। इसलिए, उत्पत्ति 9 और उत्पत्ति 1 और 2 के बीच संबंध यह सुझाव दे सकते हैं कि नूह के साथ वाचा उत्पत्ति 1 और 2 में की गई वाचा का नवीनीकरण है। वाचा के कुछ तत्व यहाँ पाए जाते हैं। परमेश्वर को राजा के रूप में चित्रित किया गया है, उन सभी के संप्रभु शासक के रूप में जो उसके लोगों के साथ संबंध बनाते हैं।

वह उत्पत्ति 1 और 2 में भी सृष्टि में अपने लोगों के लिए प्रावधान करता है। सृष्टि में उस रिश्ते को बनाए रखने के लिए परमेश्वर ने शर्तें जारी की हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, जब आप उत्पत्ति 1 और 26 और 27 में वापस जाते हैं, तो परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपनी छवि में, अपनी समानता में बनाएँ, ताकि वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों, पशुओं और सभी जंगली जानवरों और जमीन पर रेंगने वाले सभी जीवों पर शासन कर सकें।

इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया, परमेश्वर के स्वरूप में, उसने उन्हें बनाया, नर और मादा, उसने उन्हें बनाया। परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनसे कहा, यह श्लोक 28 है, फलदायी बनो और संख्या में बढ़ो, पृथ्वी को भर दो और उस पर अधिकार करो, समुद्र की मछलियों पर शासन करो। फिर, अध्याय 2 में, श्लोक 15 में और उसके बाद के श्लोक

15 और 16 में, प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लिया और उसे अदन के बगीचे में काम करने और उसकी देखभाल करने के लिए रखा।

और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, तू बाग के वृक्ष का फल खा सकता है, श्लोक 17, परन्तु तू भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खा, क्योंकि जब तू खाएगा, तो अवश्य मर जाएगा। इसलिए, यहाँ परमेश्वर और आदम और हव्वा के बीच संबंध बनाए रखने के लिए शर्तों या आदेशों के संदर्भ पर ध्यान दें, साथ ही आज्ञाकारिता और आज्ञा न मानने के लिए आशीर्वाद और शाप भी दिए गए हैं, इसी तरह अध्याय 2 श्लोक 17 में भी।

इसलिए, चाहे हम इसे वाचा के रूप में वर्णित करें या नहीं, परमेश्वर का अपने लोगों के साथ संबंध निश्चित रूप से बाद के वाचा संबंधों के निशानों को दर्शाता है जो परमेश्वर अपने लोगों के साथ स्थापित करता है। इसलिए आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर का संबंध कम से कम एक वाचा प्रकार का संबंध है। फिर से, इसे वाचा के रूप में वर्णित करने में कुछ कमियाँ हैं, जबकि अन्य लोगों ने तर्क दिया है कि यह एक वाचा संबंध है।

तो, मैं इसे यहीं छोड़ता हूँ। कम से कम हम उत्पत्ति 1 और 2 में अदन के बगीचे में आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर के रिश्ते में बाद के वाचा संबंधों के निशान पहले से ही पाते हैं। अगला पड़ाव नूह के साथ की गई वाचा है, जो उत्पत्ति के अध्याय 9 में नूह की वाचा है। नूह के साथ की गई वाचा महत्वपूर्ण है।

यह एक सार्वभौमिक वाचा है जो पूरी मानवता के साथ बनाई गई है। हम देखेंगे कि अन्य अधिकांश वाचाएँ मुख्य रूप से इस्राएल राष्ट्र के साथ बनाई गई हैं। नूह के साथ की गई वाचा एक सार्वभौमिक वाचा है जो पूरी मानवता के साथ बनाई गई है।

हम पहले ही उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 के साथ कुछ संबंधों को देख चुके हैं, खास तौर पर अध्याय 9 में। उदाहरण के लिए, पानी के घटने और सूखी भूमि के उभरने का संदर्भ। हमने आदम और हव्वा को दिए गए आदेश के नवीनीकरण को देखा है कि वे फलदायी बनें और गुणा करें, जिसे अब नूह को दोहराया गया है। इसलिए अध्याय 9, श्लोक 1 में, फिर परमेश्वर ने नूह और उसके बेटों को आशीर्वाद दिया, और उनसे कहा, फलदायी बनो और संख्या में बढ़ो और पृथ्वी को भर दो।

वही आदेश जो आदम और हव्वा को उत्पत्ति के अध्याय 1 में दिया गया था। और फिर श्लोक 6 से शुरू करते हुए, वह कहता है, तुम फलो-फूलो और संख्या में बढ़ो, पृथ्वी पर बढ़ो और उस पर बढ़ो। फिर परमेश्वर ने नूह और उसके बेटों से कहा, अब मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों के साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ। और तुम्हारे साथ रहने वाले हर जीवित प्राणी, पक्षी, मवेशी, आदि, पृथ्वी पर रहने वाले हर जीवित प्राणी के साथ, मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ।

फिर कभी भी बाढ़ के पानी से सारा जीवन नष्ट नहीं होगा, और फिर कभी भी पृथ्वी को नष्ट करने के लिए बाढ़ नहीं आएगी। और फिर से, ध्यान दें कि पद 12 से शुरू होकर वाचा शब्द कितनी बार आता है। परमेश्वर ने कहा कि यह मेरी वाचा का चिन्ह है।

मैं अपने और तुम्हारे बीच और तुम्हारे साथ रहने वाले हर जीवित प्राणी के बीच आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए एक वाचा बाँध रहा हूँ। श्लोक 15, मैं अपने और तुम्हारे और सभी जीवित प्राणियों के बीच अपनी वाचा को याद रखूँगा। श्लोक 16 में, जब भी बादलों में इंद्रधनुष दिखाई देता है, जो वाचा का संकेत है, मैं इसे देखूँगा और परमेश्वर और पृथ्वी पर हर तरह के सभी जीवित प्राणियों के बीच की शाश्वत वाचा को याद रखूँगा।

तो मूल रूप से, नूह के साथ की गई वाचा के साथ जो कुछ होता हुआ प्रतीत होता है, वह यह है कि यह उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के लिए परमेश्वर के इरादे या सृष्टि के आदेश की पुनः पुष्टि है। सारी सृष्टि को फलदायी होना था, गुणा करना था, और पृथ्वी को परमेश्वर की महिमा से भरना था। इसलिए नूह के साथ की गई वाचा परमेश्वर की अपनी पहली सृष्टि के प्रति प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि कर रही है, और यदि उत्पत्ति 1 और 2 एक वाचा है, तो अब हम पाते हैं कि वाचा को एक नए रिश्ते की शुरुआत करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि एक वाचा पहले से मौजूद रिश्ते को औपचारिक रूप दे सकती है।

यदि उत्पत्ति 1 और 2 में कोई वाचा है। लेकिन कम से कम, नूह के साथ की गई वाचा फिर से अपनी सृष्टि और मानवता के प्रति परमेश्वर की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। और परमेश्वर की छुटकारे की वाचाओं के लिए आधार प्रदान करेगी जो वह अपने लोगों के साथ करेगा। यह उत्पत्ति 1 और 2 में मानवता के साथ उसके मूल संबंध को बहाल करेगा। तो इसे देखने का एक संभावित तरीका यह है कि परमेश्वर उत्पत्ति 1 और 2 में मानवता के साथ एक वाचा प्रकार का संबंध स्थापित करता है। लेकिन पाप के कारण, वह संबंध टूट जाता है।

और फिर परमेश्वर उत्पत्ति अध्याय 6 से 9 में पृथ्वी का न्याय करता है। लेकिन फिर परमेश्वर नूह के साथ वाचा के माध्यम से अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। परमेश्वर उत्पत्ति अध्याय 9 में सृष्टि और मानवता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। छुटकारे की वाचाओं की तैयारी में जिसे वह अपने लोगों के साथ स्थापित करना शुरू करेगा, जिसकी शुरुआत उसने अब्राहम के साथ की थी।

तो, देखने के लिए अगली वाचा अब्राहमिक वाचा है। हम उत्पत्ति 12, उत्पत्ति 15, उत्पत्ति 17 और उत्पत्ति 22 में भी अब्राहमिक वाचा का वर्णन, स्थापना और विकास पाते हैं। उत्पत्ति 12 से शुरू होकर अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में, हम अब्राहम को उस देश से ले जाने का परमेश्वर का इरादा पाते हैं जिसमें वह अब रह रहा है।

और उसे एक नए देश में ले जाएगा जो वह उसे देने जा रहा है। हमने वह देश देखा जो वह अब्राहम को देने जा रहा था, और यह उत्पत्ति 1 और 2 में उसके वादे को पूरा करने के इरादे से था। चूँकि आदम और हव्वा को बगीचे से निकाल दिया गया था, इसलिए परमेश्वर अब अब्राहम के साथ की जाने वाली वाचा के ज़रिए उन्हें वापस लाने का इरादा रखता है। इसके परिणामस्वरूप, वह अब्राहम के नाम को महान बनाएगा और उसे आशीर्वाद देगा।

अंततः, पृथ्वी के सभी राष्ट्र अब्राहम द्वारा आशीर्वादित होंगे। यह नूह की वाचा से एक तरह का संबंध स्थापित करता है जहाँ परमेश्वर अपनी मंशा, सारी सृष्टि के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करता है। लेकिन अब्राहम की वाचा पहली वाचा है जिसका उद्देश्य उद्धार लाना है।

बहुत से लोगों ने इसे छुटकारे की वाचा कहा है। वास्तव में, अब्राहम को संभवतः कम से कम आंशिक रूप से एक नए आदम प्रकार के व्यक्ति के रूप में वर्णित किया जा रहा है, और अब पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद दिया जाना है। फिर से, आदम और हव्वा को जो करना था, और जो पूरी पृथ्वी को भर देता है, फलदायी होना और गुणा करना और पूरी पृथ्वी को भर देना, अब अब्राहम की वाचा के माध्यम से पूरा होगा जहाँ वह पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद होगा।

पृथ्वी के सभी राष्ट्र अब्राहम के द्वारा धन्य होंगे। हम पहले ही इस तथ्य पर ध्यान दे चुके हैं कि उसे एक ऐसे देश में जाना है जिसे परमेश्वर उसे फिर से दिखाएगा, जिसे मूल आदम ने खो दिया था जब उसे और आदम और हव्वा को ईडन के बगीचे से निकाल दिया गया था या निर्वासित कर दिया गया था। अब परमेश्वर उन्हें उस भूमि पर, बगीचे में, स्वर्ग में, पहली सृष्टि में वापस लाने जा रहा है जैसा कि परमेश्वर ने मूल रूप से उन्हें इरादा किया था।

इसके अलावा, उत्पत्ति में अब्राहम के वंश या अब्राहम की संतान का संदर्भ, जहाँ परमेश्वर अब्राहम के वंश और अब्राहम की संतान के बारे में वादे करता है, संभवतः उत्पत्ति 3, श्लोक 15 और 16 के वंश की याद दिलाता है, जहाँ स्त्री का वंश अंततः सर्प के सिर को कुचल देगा। अब ऐसा लगता है कि अब्राहम और अब्राहम के वंश के साथ की गई वाचा इस सवाल का जवाब देने लगी है कि स्त्री का वंश अंततः सर्प के सिर को कैसे कुचलेगा? स्त्री के वंश के माध्यम से उद्धार कैसे पूरा होगा? खैर, यह एक विशिष्ट वंश के माध्यम से होगा, अर्थात् अब्राहम और उसके वंश या उसकी संतान के माध्यम से। तो, एक बार फिर, मूल सृष्टि के साथ संबंध हैं।

वेलम की पुस्तक किंगडम थ्रू कोवेनेंट को देता हूँ, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, लेकिन वे अब्राहमिक वाचा की संरचना के कम से कम चार तत्वों को उजागर करते हैं। पहला है अब्राहम का चुनाव या बुलावा, जिसे हमने उत्पत्ति 12, पद 1 में वाचा के केंद्र में देखा है, जहाँ परमेश्वर, एक बार फिर, अब्राहम को बुलाने और अब्राहम को उस व्यक्ति के रूप में चुनने की पहल करता है जिसके माध्यम से वह अंततः पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद देगा। दूसरा, परमेश्वर ने अब्राहम से वादे किए, वंशजों के वादे, और भूमि के वादे, जैसा कि उत्पत्ति 12 और उत्पत्ति 15 में है।

तीसरा, उत्पत्ति अध्याय 17 में खतने के चिन्ह के माध्यम से वाचा की पुष्टि की जाती है। अंत में, उत्पत्ति 22 में चौथे तत्व में, अब्राहम आज्ञाकारिता में जवाब देता है, और वाचा की पुष्टि शपथ द्वारा की जाती है। तो, एक बार फिर, उत्पत्ति 12 से 22 में अब्राहम की पूरी कहानी में वाचा के सभी तत्व पाए जाते हैं।

तो, संक्षेप में, अब्राहमिक वाचा वह साधन या तरीका है जिसके द्वारा परमेश्वर अब अपने छुटकारे की योजना को लागू करेगा। यह वह साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 में मानवता के साथ अपने मूल इच्छित रिश्ते को बहाल करेगा जो पाप द्वारा बर्बाद हो गया था, एक

ऐसा रिश्ता जिसके लिए परमेश्वर उत्पत्ति अध्याय 9 में फिर से अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। अब, अब्राहमिक वाचा वह तरीका है जिससे परमेश्वर उत्पत्ति 1 और 2 से उस मूल रिश्ते को बहाल करने के लिए छुटकारे की अपनी योजना को लागू करेगा। अगली प्रमुख वाचा जिसके बारे में मैं संक्षेप में बात करना चाहता था, वह है मूसा की वाचा, वह वाचा जो परमेश्वर ने निर्गमन 19 में मूसा के साथ की थी, और उसके बाद की। मूसा की वाचा को अब, फिर से, अन्य वाचाओं, नूह, नूह की वाचा, या सृष्टि (यदि आप वहाँ देखें) या अब्राहमिक वाचा से अलग या अलग नहीं देखा जाना चाहिए।

लेकिन अधिक विशेष रूप से, मूसा की वाचा वह विशिष्ट माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर अब्राहम के साथ अपनी वाचा को पूरा करने में इस्राएल के साथ व्यवहार करेगा। फिर से, बाइबिल धर्मशास्त्र में केंद्रीय विषयों में अपने अध्याय में स्कॉट हैफ़मैन को उद्धृत करते हुए, वह कहता है कि पतन से पहले मानवता के साथ परमेश्वर का मूल वाचा संबंध, सृष्टि पर आधारित, मोज़ेक वाचा के माध्यम से मोज़ेक वाचा के माध्यम से अब्राहम और इस्राएल दोनों के साथ मोज़ेक वाचा के माध्यम से छुटकारे के कार्य के रूप में स्थापित किया गया है। बाइबिल धर्मशास्त्र के नए शब्दकोश में वाचा पर लेख कहता है कि मोज़ेक वाचा इस्राएल, अब्राहम की राष्ट्रीय संतान के संरक्षण की गारंटी देती है।

इसलिए, मूसा की वाचा वह विशिष्ट तरीका होगा जिससे परमेश्वर अब्राहम की वाचा की पूर्ति लाने के लिए इस्राएल के साथ व्यवहार करेगा। अब, उदाहरण के लिए, निर्गमन अध्याय 19 में, ऐसे कई पाठ हैं जिन्हें हम पढ़ सकते हैं। लेकिन निर्गमन अध्याय 19 में, हमें परमेश्वर के वाचा संबंध के संकेत मिलते हैं जिसे वह अब मूसा के माध्यम से अपने लोगों के साथ स्थापित करेगा।

इसलिए, मैं निर्गमन 19 की पहली छह आयतें पढ़ूँगा। तीसरे महीने के पहले दिन, जब इस्राएली मिस्र से निकले, उसी दिन वे सिनाई के रेगिस्तान में पहुँचे। रपीदीम से निकलकर वे सिनाई के रेगिस्तान में पहुँचे, और इस्राएल ने पहाड़ के सामने रेगिस्तान में डेरा डाला।

फिर मूसा परमेश्वर के पास गया, और प्रभु ने उसे पहाड़ से बुलाया। फिर से, ध्यान दें कि परमेश्वर ने संबंध स्थापित करने की पहल की और उसे पहाड़ पर बुलाया और कहा, यह वही है जो तुम्हें याकूब के वंशजों से कहना है। अब्राहमिक वाचा, अब्राहम और उसके वंशजों से संबंध पर ध्यान दें।

यही बात तुम्हें याकूब की सजा के बारे में और इस्राएल के लोगों से भी कहनी है। तुमने खुद देखा है कि मैंने मिस्र के साथ क्या किया और कैसे मैं तुम्हें उकाब के पंखों पर उठाकर अपने पास ले आया। अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रावधान की धारणा पर ध्यान दें।

अब यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब जातियों में से तुम ही मेरी निज सम्पत्ति ठहरोगे। और चाहे सारी पृथ्वी मेरी हो, तौभी तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। ये वे बातें हैं जो तुम्हें इस्राएलियों से कहनी हैं।

इसलिए, अध्याय 20, दस आज्ञाओं के दसवें अध्याय से शुरू करते हुए, प्रावधान और वाचा को बनाए रखने और परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली आज्ञाओं को बनाए रखने की शर्तों पर ध्यान दें।

यदि वे आज्ञा का पालन करते हैं तो आशीर्वाद के विषय पर ध्यान दें। बाद में, हम मूसा की वाचा की शर्तों में शाप पाते हैं, आज्ञा का पालन करने और वाचा के रिश्ते को बनाए रखने से इनकार करने के लिए शाप।

हम पहले ही लैव्यव्यवस्था 26 और आयत 11 और 12 में वाचा सूत्र का उल्लेख कर चुके हैं, जिसे हम निर्गमन के कई अन्य खंडों में पहले से ही पाते हैं। मैं होऊंगा, तुम मेरे लोग होगे। मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा।

इसलिए, मूसा की वाचा परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साथ संबंध बनाने का एक तरीका है, ताकि वह उस संबंध को बनाए रख सके जो उसने अब्राहम के साथ की गई वाचा को पूरा करने का उसका तरीका है। अगली प्रमुख वाचा दाऊद की वाचा है। हम पाते हैं कि दाऊद की वाचा का सबसे स्पष्ट उल्लेख 2 शमूएल अध्याय 7 में किया गया है, जहाँ भविष्यवक्ता नातान दाऊद के पास आता है।

1 इतिहास अध्याय 17, और फिर अन्य भजनों के अलावा, भजन 89 में परमेश्वर द्वारा दाऊद के साथ की गई वाचा का स्पष्ट उल्लेख है। यशायाह 55 में परमेश्वर द्वारा दाऊद के साथ की गई वाचा का उल्लेख है। यहजेकेल 36 में, दाऊद की वाचा का उल्लेख है।

इसलिए, दाऊद की वाचा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका आधार यह है कि परमेश्वर दाऊद से सदा के लिए राजत्व का वादा करता है। उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 7 से शुरू करते हुए, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या दाऊद सोचता है कि कोई विशिष्ट पुत्र हमेशा के लिए उसके सिंहासन पर बैठेगा या यह कि सिंहासन हमेशा के लिए बना रहेगा।

हम देखेंगे कि यह और भी स्पष्ट हो जाता है, यहाँ तक कि जब आप यशायाह अध्याय 9 तक पहुँचते हैं, तो यशायाह के लेखक को एक निश्चित पुत्र से दाऊद के सिंहासन पर बैठने की उस वाचा की भूमिका को पूरा करने की उम्मीद है और यह राजत्व हमेशा के लिए रहेगा। लेकिन वादे का दिल एक शाश्वत राजत्व है जो दाऊद के माध्यम से आएगा। ध्यान दें कि 2 शमूएल 7 और श्लोक 14 में भी, जो आमतौर पर पाठ की ओर इशारा करता है, हालाँकि यह उससे कहीं अधिक व्यापक है।

लेकिन 7:14 में वाचा के सूत्र पर ध्यान दें। मैं उसका पिता होऊंगा, जो दाऊद के वंशज को संदर्भित करता है। मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

तो, पिता और पुत्रत्व की वाचा की भाषा पर ध्यान दें जो वाचा की भाषा के केंद्र में है, बहुत हद तक इस बात से मिलती-जुलती है कि, मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, वे मेरे लोग होंगे। मैं उनका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। हालाँकि, अगर आप थोड़ा और व्यापक रूप से पढ़ें, तो मैं चाहता हूँ कि आप अब्राहमिक वाचा से कुछ कनेक्शनों पर भी ध्यान दें, जो यह सुझाव देता है कि दाऊदिक वाचा मूसा की वाचा का एक और तरीका है, लेकिन अब्राहमिक वाचा को भी पूरा किया जाएगा।

मुझे वापस आने दो। फिर से, हम अक्सर सिर्फ अध्याय 7 और श्लोक 14 पढ़ते हैं, लेकिन इस व्यापक संदर्भ में, अब्राहमिक वाचा से कई संबंध हैं। तो यह शुरू होता है, मैं श्लोक 8 से शुरू करूँगा। अब, मेरे सेवक दाऊद से कहो, यह वही है जो नबी नातान दाऊद से कहेगा, उसे प्रभु का वचन सुनाएगा।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा यों कहता है : मैंने तुम्हें चरागाहों से, भेड़-बकरियों को चराने से लिया, और इस्राएल में अपने लोगों का शासक नियुक्त किया। तुम जहाँ भी गए मैं तुम्हारे साथ रहा हूँ। मैंने तुम्हारे सामने से तुम्हारे सभी शत्रुओं को नष्ट कर दिया है।

अब, मैं तुम्हारा नाम महान बनाऊँगा, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ किया था, जैसे धरती पर सबसे महान लोगों के नाम। और मैं अपने लोगों, इस्राएल के लिए एक जगह प्रदान करूँगा, और उन्हें वहाँ बसाऊँगा, जो अब्राहम को उस भूमि पर लाने के वादे को दर्शाता है, एक ऐसी जगह पर जिसे परमेश्वर उसे दिखाएगा। मैं अपने लोगों इस्राएल के लिए एक जगह प्रदान करूँगा।

मैं उन्हें रोपूँगा ताकि वे अपना घर बना सकें और फिर कभी परेशान न हों। दुष्ट लोग अब उन पर अत्याचार नहीं करेंगे, जैसा कि उन्होंने शुरू में किया था। फिर वह यह कहकर समाप्त करता है, मैं तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से विश्राम दूँगा।

यहोवा तुमसे कहता है कि यहोवा स्वयं तुम्हारे लिए एक घर बनाएगा। जब तुम्हारे दिन पूरे हो जाएँगे और तुम अपने पूर्वजों के साथ विश्राम करोगे, तो मैं तुम्हारे वंश या संतान को तुम्हारे उत्तराधिकारी के रूप में खड़ा करूँगा, जो तुम्हारे अपने मांस और खून से बना हो। इसलिए, महान नाम के संदर्भ पर ध्यान दें, उन्हें एक स्थान, बीज या वंशज दिया गया है।

इसलिए, मुझे लगता है कि अब अब्राहमिक वाचा में जो हो रहा है, वह यह है कि परमेश्वर अब और अधिक विस्तार से व्यक्त कर रहा है कि मूसा की वाचा के माध्यम से अब्राहमिक वाचा कैसे पूरी होने जा रही है। यह अब एक विशिष्ट वंश के माध्यम से, दाऊद के वंश के माध्यम से आएगा। दिलचस्प बात यह है कि, एक साइड नोट के रूप में, मैथ्यू अध्याय 1:1 में यह दिलचस्प है कि जब यीशु मसीह इन वाचाओं को पूरा करने के लिए दृश्य पर आता है, तो हम पाते हैं कि यीशु मसीह को दाऊद के पुत्र, अब्राहम के पुत्र, दोनों के रूप में वर्णित किया गया है।

तो, दोनों वाचाएँ जुड़ी हुई हैं। एक और संबंध यह है कि उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 के साथ न केवल दाऊद की वाचा मूसा की वाचा के माध्यम से अब्राहम की वाचा को अधिक विशेष रूप से पूरा करती है, बल्कि यह मूल सृष्टि तक भी जाती है। हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर उन्हें एक ऐसा स्थान देने जा रहा है जहाँ उन्हें अपने शत्रुओं से आराम मिलेगा।

यह उस विश्राम से एक दिलचस्प संबंध है जिसका आनंद परमेश्वर ने मूल सृष्टि में लिया था। अब, परमेश्वर के लोगों को उनके शत्रुओं से विश्राम मिलने जा रहा है जब परमेश्वर उनके लिए एक स्थान प्रदान करता है, जो फिर से उस भूमि या सृष्टि से जुड़ता है जिसे परमेश्वर ने मूल रूप से उत्पत्ति 1 और 2 में अपने लोगों को दिया था। इसके अलावा, इस पूरे फैसले के संदर्भों पर ध्यान

दें। परमेश्वर उसे नियुक्त करता है, दाऊद को इस्राएल के लोगों पर शासक के रूप में नियुक्त करने जा रहा है।

और फिर श्लोक 13, वास्तव में श्लोक 12 तक, मैं तुम्हारे वंश को तुम्हारे उत्तराधिकारी के रूप में खड़ा करूँगा, तुम्हारा अपना मांस और खून। मैं उसका राज्य स्थापित करूँगा। वह वही है जो मेरे नाम के लिए एक घर बनाएगा।

मैं उसके राज्य के सिंहासन को हमेशा के लिए स्थापित करूँगा। अब, क्या आप उत्पत्ति 1 के साथ संबंध देखते हैं? आदम और हव्वा, अध्याय 1, 26 और 27 में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को जो आदेश दिया था, उसका एक हिस्सा पूरी सृष्टि पर शासन करना था। अब, मुझे लगता है, अधिक विशेष रूप से, जिस तरह से परमेश्वर, परमेश्वर की छवि के वाहक के रूप में, उत्पत्ति 1 में वापस एक पल के लिए, परमेश्वर की छवि के वाहक के रूप में, उन्हें परमेश्वर के शासन को प्रतिबिंबित करना था और पूरी सृष्टि पर परमेश्वर के शासन को फैलाना था।

अब, मुझे लगता है कि यहाँ जो हो रहा है, वह अधिक विशेष रूप से, जिस तरह से परमेश्वर ने अपने लोगों को सारी सृष्टि पर शासन करने, अपने शासन का प्रतिनिधित्व करने का आदेश दिया है, वह अब एक दाऊदी शासक के माध्यम से पूरा होगा जिसका सिंहासन हमेशा के लिए कायम रहेगा, जिसका सिंहासन परमेश्वर स्थापित करेगा ताकि वह अपने लोगों और अंततः सारी सृष्टि पर शासन करेगा। फिर से, अगर मैं बाद के कुछ भजनों को ला सकता हूँ जिन्हें हमने पहले ही देखा है, अगर आपको याद हो, भजन अध्याय 2, भजन 89 में, अंततः, दाऊद के पुत्र, मसीहाई राजा को पृथ्वी के छोर पर अपना अधिकार दिया जाना था, सभी राष्ट्रों, पृथ्वी के सभी राजाओं को अपना अधिकार दिया जाना था। इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि जिस तरह से परमेश्वर अंततः अपना उद्देश्य पूरा करेगा जिसे आदम और हव्वा पूरी सृष्टि पर परमेश्वर के शासन का प्रतिनिधित्व करने में विफल रहे, वह एक दाऊदी शासक के माध्यम से है जो अपने लोगों पर शासन करेगा, उनकी ओर से शासन करेगा, और अंततः उस शासन को पृथ्वी के छोर तक फैलाएगा और अपनी विरासत के रूप में पूरी पृथ्वी को विरासत में लेगा।

और ऐसा तब होगा जब परमेश्वर अपना सिंहासन और अपना राज्य स्थापित करेगा। और आप एक और पाठ पर जा सकते हैं जिसे आप देख सकते हैं, जो यशायाह अध्याय 9 होगा। वास्तव में, यशायाह अध्याय 9 में, एक और दाऊदी पाठ, उन अंशों में से एक जिसे हम अक्सर क्रिसमस के समय पढ़ते हैं या क्रिसमस कार्ड पर पाते हैं, लेकिन निश्चित रूप से, यह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यशायाह अध्याय 9, श्लोक 6 से शुरू होता है, क्योंकि हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है, हमें एक बेटा दिया गया है, और सरकार उसके कंधों पर होगी।

उसे अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, शांति का राजकुमार कहा जाएगा। उसकी सरकार और शांति की महानता का कोई अंत नहीं होगा। वह दाऊद के सिंहासन पर बैठकर अपने राज्य पर शासन करेगा, न्याय और धार्मिकता के साथ इसे स्थापित और बनाए रखेगा।

उस समय से लेकर हमेशा के लिए, सर्वशक्तिमान प्रभु का उत्साह इसे पूरा करेगा। दाऊद के शासन करने और पूरी पृथ्वी पर शासन करने, दाऊद के राज्य की स्थापना करने के संबंध पर ध्यान दें, संभवतः फिर से परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति में आदम और हव्वा को परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में, परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में सृष्टि पर शासन करने के लिए उनके स्वरूप के रूप में। लेकिन वे इसमें असफल रहे।

दाऊद की वाचा में एक बात यह है कि परमेश्वर का इरादा वंश के माध्यम से, दाऊद की वंशावली के माध्यम से उस पूर्ति को लाने का है। अंत में, हम नई वाचा पर आते हैं, वह नई वाचा जो परमेश्वर अपने लोगों के साथ बनाता है। नई वाचा के केंद्र में इस्राएल की पापपूर्णता की समस्या है, जो मूसा की वाचा और मूसा की वाचा के तहत स्थापित परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के रिश्ते के साथ मुख्य समस्या थी।

कि समस्या, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने स्पष्ट किया है, मूसा की वाचा में नहीं थी। समस्या लोगों की पापपूर्णता, विद्रोह और कठोरता थी, जिसके कारण एक नई वाचा की स्थापना की आवश्यकता हुई।

मुख्य अंतर यह है कि नई वाचा अपने साथ यह गारंटी लेकर आती है कि इसे तोड़ा नहीं जाएगा क्योंकि यह एक नए दिल के प्रावधान और पवित्र आत्मा के प्रावधान के साथ आती है जो गारंटी देती है कि, अंततः, नई वाचा रखी जाएगी और पुरानी वाचा की तरह तोड़ी नहीं जाएगी। और बाद में, हम इब्रानियों की पुस्तक पर थोड़ा नज़र डालेंगे, जो पुरानी और नई वाचा की तुलना और विरोधाभास करती है। और फिर से इसके मूल में, पुरानी वाचा अंततः इसका ध्यान नहीं रख सकी, ऐसा नहीं है कि यह बिल्कुल नहीं रख सकी, लेकिन अंततः यह विद्रोह और पाप की समस्या और इस्राएली लोगों की कठोरता का ध्यान नहीं रख सकी, जिसे अब नई वाचा नए दिल और पवित्र आत्मा के प्रावधान के माध्यम से करती है।

पुराने नियम में नई वाचा का उल्लेख करने वाले प्राथमिक पाठ यिर्मयाह 31 और यहजकेल 36 हैं। लेकिन यिर्मयाह 31, एक ऐसा अंश जिसे नए नियम में बाद में उद्धृत किया गया है, यिर्मयाह 31 और श्लोक 31 से 33, हम यह पढ़ते हैं: दिन आ रहे हैं, यहोवा की घोषणा है। तो फिर से, उस समय की आशा करते हुए जब परमेश्वर अपने लोगों को निर्वासन से बहाल करेगा, यिर्मयाह कहता है, दिन आ रहे हैं, यहोवा की घोषणा है, जब मैं इस्राएल के लोगों और यहूदा के लोगों के साथ एक नई वाचा बाँधूंगा।

फिर, इस समय, राज्य इस्राएल के उत्तरी राज्य और यहूदा के दक्षिणी राज्य के बीच विभाजित हो गया था। और यह उस वाचा के समान नहीं होगा जो मैंने उनके पूर्वजों, मूसा के साथ की थी, जब मैंने उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के लिए हाथ पकड़कर ले गया था, क्योंकि उन्होंने मेरी वाचा को तोड़ दिया, हालाँकि मैं उनका पति था, यहोवा की वाणी है। फिर से, वाचा की भाषा पर ध्यान दें।

यहोवा की यह वाणी है, कि मैं इस्राएल के लोगों से यह वाचा बाँधूंगा। मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में डालूँगा। मैं उसे उनके हृदय पर लिखूँगा।

मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे लोग होंगे। वाचा का सूत्र फिर से वही है। अब वे अपने पड़ोसी को नहीं सिखाएँगे या एक दूसरे से नहीं कहेंगे, नहीं, प्रभु, क्योंकि वे सभी मुझे जानेंगे, छोटे से लेकर बड़े तक, प्रभु की घोषणा है, क्योंकि मैं उनकी दुष्टता को क्षमा करूँगा और उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखूँगा।

तो यह यिर्मयाह द्वारा नई वाचा के सम्बन्ध का वर्णन है जहाँ परमेश्वर पाप से निर्णायक रूप से निपटेगा। वह उनके हृदयों में अपना नियम लिखेगा, यह गारंटी देते हुए कि परमेश्वर के लोग वाचा के सम्बन्ध को फिर से नहीं तोड़ेंगे। मुझे लगता है कि हम वही नई वाचा पाते हैं, हालाँकि वाचा शब्द इन आयतों में स्पष्ट रूप से नहीं आता है।

मुझे लगता है कि हम यहजकेल अध्याय 36 में नई वाचा की स्थापना को स्पष्ट रूप से पाते हैं। संभवतः अन्य ग्रंथों में भी भविष्यवक्ताओं में, जैसे कि योएल अध्याय दो, लेकिन इसे पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों के काम अध्याय दो में उद्धृत किया गया है। लेकिन यहजकेल अध्याय 36 में, और पद 26 से शुरू करते हुए, मुझे वापस जाना चाहिए और यहजकेल 36 के पद 24 से शुरू करना चाहिए।

क्योंकि मैं तुम्हें जातियों में से निकालूँगा, और सब देशों से इकट्ठा करके तुम्हारे निज देश में लौटा ले आऊँगा। फिर से, लोगों को बंधुआई से निकालकर उनके देश में वापस लाने के संदर्भ में।

और फिर मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे। मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धियों और तुम्हारी सारी मूर्तियों से शुद्ध करूँगा। फिर से, यह पापों की क्षमा के बारे में यिर्मयाह 31 में दी गई भाषा के बहुत समान है।

मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा। मैं तुम में से पत्थर का हृदय निकालकर मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर देकर तुम्हें मेरी विधियों पर चलने और मेरे नियमों को मानने में चौकसी करने के लिए प्रेरित करूँगा।

फिर तुम उस देश में रहोगे जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, और तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा। वाचा का सूत्र फिर से है। इसके अलावा, यहजकेल अध्याय 37 भी एक और है, फिर से; ध्यान दें कि वाचा शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, लेकिन वाचा की भाषा हर जगह है।

फिर, अध्याय 37 और आयत 26 से 28 में, मैं वापस आता हूँ और 24 से शुरू करता हूँ। मेरा सेवक, दाऊद, उनका राजा होगा। तो, ध्यान दें कि दाऊद की वाचा पूरी हो रही है, और उन सभी का एक चरवाहा होगा।

वे मेरे नियमों का पालन करेंगे और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहेंगे। वे उस देश में रहेंगे जो मैंने अपने पिता याकूब को दिया था, वह देश जहाँ तुम्हारे पूर्वज रहते थे। अब्राहमिक वाचा के संदर्भ में, वे और उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे हमेशा के लिए वहाँ रहेंगे। और मेरा सेवक दाऊद हमेशा के लिए उनका राजकुमार रहेगा।

मैं उनके साथ शांति की वाचा बाँधूँगा। यह एक शाश्वत वाचा होगी। तो, वहाँ हमें अंततः वाचा की भाषा मिलती है।

मैं उनके साथ एक संबंध स्थापित करूँगा और उनकी संख्या बढ़ाऊँगा। न केवल अब्राहमिक वाचा बल्कि उत्पत्ति 1 और 2 से संबंध पर ध्यान दें, और मैं अपना पवित्र स्थान हमेशा के लिए उनके बीच रखूँगा। मेरा निवास स्थान उनके साथ होगा।

मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे। इसलिए, ये पाठ स्पष्ट रूप से वाचा, एक नवीनीकृत वाचा, एक नई वाचा का उल्लेख करते हैं। परमेश्वर अपने लोगों के साथ जो करने जा रहा है, वह संभवतः मेरे विचार से एक व्यापक वाचा के रूप में कार्य करता है जो अन्य वाचाओं द्वारा स्थापित संबंधों को पूर्णता तक ले जाएगा और साकार करेगा, सृष्टि के समय परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के साथ स्थापित संबंध।

और फिर अब्राहम के साथ, फिर इस्राएल और मूसा की वाचा के साथ शुरू हुआ। अब यह एक वाचा में चरम पर है, जो परमेश्वर ने अपने लोगों, इस्राएल के साथ बनाई है। और फिर, ध्यान दें कि इसके केंद्र में वाचा का सूत्र है, दोनों यिर्मयाह 31, पद 33 में, जो 37 के बराबर है, और पद 27 में।

मैं उनका लोग होऊँगा, और वे होंगे; मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे। इस बात पर भी ध्यान दें कि वाचा किस तरह मंदिर के विषय से भी जुड़ी हुई है। वाचा के केंद्र में परमेश्वर का अपने लोगों के साथ रहने का इरादा है। इसलिए, अब्राहमिक वाचा, मूसा की वाचा और दाऊद की वाचा में व्यक्त किया गया व्यापक वाचा संबंध अब नई वाचा में नवीनीकृत हो गया है।

इस प्रकार, एक अर्थ में, सभी पिछली वाचाएँ अब साकार हो गई हैं और नई वाचा की स्थापना में अपनी पूर्णता पा रही हैं। इसलिए, फिर से, इन्हें शायद केवल अलग-अलग वाचाओं की एक श्रृंखला के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए जिनका एक दूसरे से कोई संबंध नहीं है, बल्कि इसके बजाय, ये वाचाएँ एक दूसरे पर बनती हैं, जैसे कि नीचे, आपके पास उत्पत्ति एक और दो के साथ एक मंच है, और फिर अब्राहमिक, नूहिक वाचा और अब्राहमिक वाचा, वे एक दूसरे पर एक तरह से निर्माण करते हैं, फिर शिखर पर नई वाचा है, जिसके माध्यम से, अब्राहमिक मोज़ेक और डेविडिक वाचा में व्यक्त अपने लोगों के साथ परमेश्वर का मूल वाचा संबंध अब अंततः साकार हो गया है और अंततः पूरा हो गया है। तो यह पुराने नियम में वाचाओं का एक बहुत ही संक्षिप्त, शायद बहुत ही संक्षिप्त सर्वेक्षण है और वे कैसे कार्य करते हैं और उनका, पुनः, परमेश्वर के साथ संबंध में उनका उद्देश्य, उसके लोगों, इस्राएल के साथ संबंध स्थापित करना, लेकिन यह भी कि यह अदन की वाटिका में अपने लोगों के साथ संबंध स्थापित करने के उसके इरादे से कैसे संबंधित है।

मैं फिर यह सवाल पूछना चाहता हूँ कि ये वाचाएँ नए नियम में अपनी पूर्णता और साकारता कैसे पाती हैं? हम यिर्मयाह और यहजेकेल को देखकर पहले ही देख चुके हैं, खास तौर पर यहजेकेल को, हमने देखा है कि, और यहाँ तक कि दाऊद की वाचा को भी, हमने भविष्य में वाचा स्थापित करने के लिए परमेश्वर के इरादे को देखा है, लेकिन साथ ही, हमने यहजेकेल में दाऊद की वाचा के सन्दर्भ को भी देखा है, जिसमें परमेश्वर के अब्राहम की वाचा की अंतिम पूर्ति लाने के इरादे को

भी देखा है। ये वाचाएँ नए नियम में अपनी पूर्णता कैसे पाती हैं? इन वाचाओं में से कुछ को देखने से पहले आपको याद दिलाने के लिए दो बातें हैं, सबसे पहले, हमें उम्मीद करनी चाहिए कि ये वाचाएँ, सबसे पहले, यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपनी चरमोत्कर्ष और पूर्णता पाएँगी। इसलिए, परमेश्वर के सभी वादे मसीह में हैं; वे सभी यीशु मसीह में उनकी पूर्णता के माध्यम से फ़िल्टर किए जाते हैं।

यीशु अपने लोगों के बीच अपनी वाचा स्थापित करने के लिए परमेश्वर के वादों का चरमोत्कर्ष है। और फिर, विस्तार से, वाचा उसके लोगों में पूरी होती है जो उसके हैं, जो विश्वास में मसीह से जुड़े हुए हैं। दूसरी बात यह है कि हमें यह भी उम्मीद करनी चाहिए, जैसा कि हमने पहले ही देखा है और अन्य विषयों पर हमने विचार किया है, हम देखना जारी रखेंगे, हमें उम्मीद करनी चाहिए कि वाचाएँ पहले से ही, लेकिन अभी तक नहीं, एक साकार युगांतशास्त्र की योजना के अनुसार पूरी होंगी या, अर्थात्, आवरण, पूरी हुई वाचाओं के वादे, सबसे पहले, यीशु मसीह और उसके लोगों के व्यक्तित्व में अपनी पूर्ति पाएंगे।

लेकिन यह केवल उन वाचाओं की पूर्णता की प्रत्याशा है, नई सृष्टि में। उदाहरण के लिए, हम इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे। उदाहरण के लिए, हम पहले से ही, इब्रानियों की पुस्तक के अनुसार, पाते हैं कि यीशु मसीह ने पहले से ही यिर्मयाह अध्याय 31 की नई वाचा की स्थापना और उद्घाटन किया है।

हम यह भी स्पष्ट रूप से देखेंगे कि पौलुस सोचता है कि नई वाचा में यहजेकेल और यिर्मयाह की सारी बातें यीशु मसीह में पूरी हो गई हैं और उसके लोग और उसके पाठक पहले से ही उसमें भाग ले चुके हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें पापों की क्षमा का अनुभव होता है। पापों की क्षमा नई वाचा के साथ जुड़ी हुई है।

इसलिए, यह तथ्य कि मसीह अपने लोगों के लिए पापों की क्षमा और क्षमा लाता है, यह दर्शाता है कि नई वाचा पहले से ही एक वास्तविकता है। लेकिन फिर, हम प्रकाशितवाक्य 21 में नई सृष्टि में क्यों पाते हैं? हम वहाँ यूहन्ना को नई वाचा के सूत्र का हवाला देते हुए क्यों पाते हैं?, ऐसा इसलिए है क्योंकि नई वाचा में अभी तक एक ऐसा आयाम नहीं है जहाँ यह अंततः एक नई सृष्टि में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच पूर्ण संबंध में पूरी होगी। इसलिए, उन दो बातों को ध्यान में रखें।

वाचाएँ सबसे पहले मसीह में और फिर, विस्तार से, उसके लोगों में पूरी होती हैं जो विश्वास में उसके साथ जुड़े हुए हैं। और दूसरा, वाचाएँ पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं हुए युगांतिक तनाव के अनुसार पूरी होंगी, जिस पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं। तो, सबसे पहले, आइए सृष्टि से शुरू करें।

पुनः, इस बात पर बहस है कि क्या वाचा के अनुसार सृष्टि की रचना हुई थी, लेकिन कम से कम हम उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के समय अपने लोगों के साथ संबंध स्थापित करने के परमेश्वर के इरादे की शुरुआत पाते हैं। हमें उत्पत्ति 1 और 2 में वाचा के कई तत्व मिले हैं, इसलिए मैं वहीं से

शुरू करना चाहता हूँ और बस संक्षेप में यह देखना चाहता हूँ कि यीशु मसीह सृष्टि के समय आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर के रिश्ते के इरादे को पूरा करता है।

और अगर आप वाचा के संदर्भ में बात करना चाहते हैं, तो यीशु द्वारा सृष्टि के समय आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर द्वारा की गई वाचा को एक नए आदम के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें यीशु ने स्वयं वह कार्य पूरा किया जो आदम करने में असफल रहा। हम पहले ही एक उदाहरण देख चुके हैं, 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 में एक स्पष्ट उदाहरण एक पाठ में जहाँ पौलुस पुनरुत्थान की आवश्यकता का बचाव करने के लिए बहुत आगे जाता है, न केवल यीशु मसीह के पुनरुत्थान बल्कि विश्वासियों के पुनरुत्थान के लिए भी। 1 कुरिन्थियों के अध्याय 15 की आयत 45 में, पौलुस कहता है, जैसा लिखा है, पहला मनुष्य, आदम एक जीवन, एक जीवित प्राणी बन गया, अंतिम आदम, यीशु मसीह, एक जीवन देने वाली आत्मा।

इसलिए, यहाँ, लेखक, पॉल, स्पष्ट रूप से मसीह को अंतिम आदम के रूप में संदर्भित करता है, जो इस अर्थ में आता है कि वह पहले आदम द्वारा किए गए कार्यों को रद्द करता है। इसलिए, पहला आदम जीवन देने में विफल रहा और अपने रिश्ते के दायित्व को निभाने में विफल रहा। और अब, यीशु मसीह, दूसरे आदम के रूप में, पाप के प्रभावों को उलटने और वह करने के लिए आता है जो पहला आदम करने में विफल रहा।

रोमियों के अध्याय पाँच में और भी स्पष्ट रूप से, और फिर से, मैं पूरा भाग नहीं पढ़ूँगा, लेकिन बस इतना ही पढ़ूँगा, आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि पॉल अध्याय पाँच में क्या स्थापित कर रहा है, श्लोक 12 से शुरू होकर वास्तव में इस अध्याय के अंत तक। फिर से, मैं पूरी बात नहीं पढ़ूँगा, लेकिन आदम ने जो किया और मसीह ने अब उसके जवाब में जो किया है, उसके बीच एक बहुत ही स्पष्ट विरोधाभास है, श्लोक 12, इसलिए, जैसे पाप एक आदमी, आदम के माध्यम से दुनिया में आया, और पाप के माध्यम से मृत्यु। इस तरह, मृत्यु सभी लोगों पर आई क्योंकि उन्होंने पाप किया।

और फिर पौलुस कुछ बातों को समझाने के लिए अपनी तुलना को बीच में ही छोड़ देता है। वह आयत 13 में कहता है, निश्चित रूप से पाप व्यवस्था दिए जाने से पहले भी संसार में था, लेकिन जहाँ व्यवस्था नहीं है, वहाँ पाप किसी के खाते में नहीं डाला जाता। फिर भी, आदम के समय से लेकर मूसा के समय तक मृत्यु राज्य करती रही, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिन्होंने आज्ञा तोड़कर पाप नहीं किया, जैसा कि आदम ने किया, जो आने वाले का प्रतीक है।

इसलिए, पौलुस खुद स्पष्ट रूप से सुझाव देता है कि आदम आने वाले किसी महान व्यक्ति का प्रतीक है। अगर हम 1 कुरिन्थियों 15 की शब्दावली का उपयोग करें, तो यह दूसरे आदम का प्रतीक है, कोई ऐसा व्यक्ति जो आएगा और वह करेगा जो पहला आदम करने में असफल रहा। पौलुस आगे कहता है कि उपहार अपराध की तरह नहीं है।

क्योंकि यदि एक मनुष्य, आदम के अपराध से बहुत से लोग मर गए, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उपहार जो एक मनुष्य, यीशु मसीह के अनुग्रह से आया, बहुतों पर कितना अधिक बढ़ा, न ही परमेश्वर के उपहार की तुलना एक मनुष्य के पाप के परिणाम से की जा सकती है। न्याय एक

पाप के बाद आया और निंदा लाया, लेकिन उपहार कई अपराधों के बाद आया और औचित्य लाया। और फिर, अगर मैं श्लोक 18 पर जा सकता हूँ, तो परिणामस्वरूप, जैसे एक अपराध सभी लोगों के लिए निंदा का परिणाम होता है।

इसी तरह, यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से एक धार्मिक कार्य ने सभी लोगों के लिए जीवन लाया, ठीक वैसे ही जैसे एक व्यक्ति की अवज्ञा के माध्यम से, कई लोग पापी बन गए। इसी तरह, एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के माध्यम से, कई लोग धर्मी बन गए। दूसरे शब्दों में, कभी-कभी हम इसे केवल यह कहने के लिए पढ़ते हैं कि यीशु मसीह की मृत्यु पतन के प्रभावों पर विजय प्राप्त करती है और उन्हें उलट देती है।

यह निश्चित रूप से सच है। लेकिन मुझे लगता है कि रोमियों पाँच यह भी सुझाव देता है कि यीशु मसीह न केवल आदम द्वारा किए गए कार्यों को ठीक करने के लिए आए, बल्कि मसीह वह भी करने आए जो आदम करने में असफल रहा। यानी आज्ञाकारिता का कार्य प्रस्तुत करना, जीवन लाना, और सृष्टि में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करना।

और इसलिए, जो काम आदम करने में असफल रहा, मसीह अब दूसरे आदम के ज़रिए और अपने लोगों के ज़रिए करता है जो विश्वास में उसके साथ जुड़े हुए हैं। और मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अगर आप इस संबंध में एक और पाठ की ओर रुख करें, तो मुझे लगता है कि हम पहले ही पढ़ चुके हैं, लेकिन हम इसका फिर से ज़िक्र करेंगे, वह है कुलुस्सियों का तीसरा अध्याय और पद 10। मैं वापस जाकर पद नौ पढ़ूँगा।

एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने स्व को उतार दिया है। और मैं तुम्हें सुझाव देता हूँ, और मैंने पहले भी सुझाव दिया था, और हमने यह आयत पढ़ी, पुराना स्व शायद यह दर्शाता है कि मैं आदम में कौन हूँ, मैं आदम के साथ जुड़े रहने के अधिकार के अधीन कौन हूँ। तुमने पुराने स्व को उसके अभ्यासों के साथ उतार दिया है, आयत 10, और तुमने नया स्व धारण कर लिया है।

अर्थात्, नया स्वत्व वह है जो मैं मसीह में हूँ, जो मैं मसीह के शासन के अधीन हूँ, मसीह के नियंत्रण और अधिकार के दायरे में मसीह से संबंधित हूँ। आपने एक नया स्वत्व धारण कर लिया है। अब इसे सुनिए, जो अपने सृष्टिकर्ता की छवि में ज्ञान में नया होता जा रहा है।

और हम पहले ही कह चुके हैं कि यह स्पष्ट रूप से आदम की भाषा है। यह स्पष्ट रूप से उत्पत्ति एक और दो से सृष्टि की भाषा है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह आता है और आज्ञाकारिता की पेशकश करके, जीवन लाकर और परमेश्वर के शासन को फैलाकर वह पूरा करता है जो आदम को करना चाहिए था।

और अब यह दूसरे आदम में पूरा हुआ है, लेकिन यह उसके लोगों में भी पूरा हुआ है जो नए स्व की उस भाषा में उसके साथ जुड़े हुए हैं, जो मैं मसीह में हूँ, जो कि कुलुस्सियों 1:15 में दिलचस्प रूप से देखा गया है कि यीशु अदृश्य परमेश्वर की छवि है। परमेश्वर की सच्ची छवि यीशु मसीह है। लेकिन अब, इस तथ्य के आधार पर कि हम मसीह में हैं, छवि हमारे अंदर नवीनीकृत हो गई है।

नया स्व, नया मनुष्य, वह है जो मैं मसीह में हूँ, मसीह से संबंधित हूँ। और अब परमेश्वर की छवि यीशु मसीह में नवीनीकृत हो गई है। आदम के माध्यम से परमेश्वर का इरादा अंततः दूसरे आदम में पूरा होता है, जो न केवल उस चीज़ को ठीक करता है जिसे आदम ने बिगाड़ा था, बल्कि वह भी करता है जिसे करने में आदम असफल रहा।

और फिर विस्तार से, परमेश्वर की छवि का नवीनीकरण होता है। आदम और हव्वा के लिए परमेश्वर का इरादा हममें से उन लोगों में नवीनीकृत होता है जो दूसरे आदम में मसीह के विश्वास से संबंधित हैं। तो फिर, चाहे कोई कहे कि सृष्टि के समय वाचा थी या नहीं, निश्चित रूप से, सृष्टि परमेश्वर के अपने लोगों के साथ संबंध को नवीनीकृत करने का प्रारंभिक बिंदु है।

और इसलिए, हम मसीह को दूसरे आदम के रूप में ऐसा करते हुए पाते हैं। और परमेश्वर ने आदम के लिए अपने उद्देश्यों को दूसरे आदम के माध्यम से पूरा किया। और यह दूसरे आदम के माध्यम से ही है कि मानवता के लिए परमेश्वर के उद्देश्य हम में पूरे होते हैं।

संक्षेप में बात करने के लिए अगली वाचा अब्राहमिक वाचा है। हमने अब्राहमिक वाचा के साथ देखा, यह पहली मुक्तिदायी वाचा है जहाँ परमेश्वर अब्राहम और उसके वंश के माध्यम से अपने उद्देश्य को पूरा करने का इरादा रखता है, विशेष रूप से उत्पत्ति 12 के बाद, अब्राहम के वंश और परमेश्वर के वादे के सभी संदर्भ कि वह उसके वंश को समुद्र की रेत और आकाश के तारों से भी अधिक असंख्य बना देगा। अब्राहम से किए गए वादे अब्राहम के सच्चे वंश और वंशज में पूरे होते हैं, जो यीशु मसीह का व्यक्तित्व है।

हम इसे मत्ती के पहले अध्याय और पद एक में पहले ही देख चुके हैं, जहाँ मत्ती के सुसमाचार की शुरुआत में ही, वह यीशु मसीह को दाऊद के पुत्र और अब्राहम के पुत्र के रूप में वर्णित करता है। संभवतः, हम यीशु मसीह को अब्राहम के पुत्र के रूप में उनकी भूमिका में अध्याय दो में ज्योतिषियों की यात्रा के साथ शुरू करते हुए पाते हैं, जो बुद्धिमान पुरुष विदेशियों के रूप में आते हैं, अन्य देशों के लोग जो अब मत्ती अध्याय दो में मसीह की आराधना करने के लिए आकर अब्राहम की वाचा की आशीषों का अनुभव करने आते हैं। लेकिन बात यह है कि मत्ती अध्याय एक, पद एक में, लेखक यह संकेत देना चाहता है कि वह मसीह को दाऊद के पुत्र के रूप में कैसे प्रस्तुत करने जा रहा है, लेकिन साथ ही अब्राहम के पुत्र के रूप में भी ताकि दाऊद के साथ की गई वाचा की आशीषें, अब्राहम की वाचा की आशीषें अब सभी देशों तक पहुँचें।

इसलिए, मत्ती ने अपने शिष्यों को अब्राहम से किए गए वादों को पूरा करने के लिए सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए अपने अनुयायियों को बुलाने के साथ समाप्त किया। इसलिए, यीशु दाऊद का सच्चा पुत्र है। हम कुछ ऐसा ही होते हुए पाते हैं, या हम गलातियों के अध्याय तीन में एक समान बात होते हुए पाते हैं, एक पाठ जिसका हमने पहले ही उल्लेख किया है और गलातियों के अध्याय तीन और श्लोक 16 में संदर्भित किया है।

हम इस पाठ पर बाद में मूसा की वाचा के संबंध में भी लौटेंगे। लेकिन गलातियों के अध्याय तीन, पद 16 में, पौलुस यहूदीवादियों के विपरीत अब्राहम की वाचा की प्रधानता के लिए तर्क दे रहा है, जो अन्यजातियों को बाहर रखना चाहते थे और जो उद्धार के वादों को केवल मूसा की वाचा के

साथ जोड़ना चाहते थे। पौलुस के तर्क का एक हिस्सा अब्राहम की वाचा की प्रधानता को प्रदर्शित करना है, जहाँ परमेश्वर, फिर से अब्राहम के माध्यम से, पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद देगा।

लेकिन एक दिलचस्प व्याख्यात्मक कदम में, पौलुस अब्राहम के वंशजों के संदर्भ में अब्राहम के वंश के संदर्भ में उत्पत्ति से अब्राहमिक वाचा की भाषा को उठाता है और देखता है कि वह इसके साथ क्या करता है। अध्याय तीन से शुरू करते हुए, मुझे वापस जाना चाहिए और छंद सात और आठ को पढ़ना चाहिए, जो फिर से स्पष्ट रूप से पौलुस के इरादे को अब्राहमिक वाचा से जोड़ने का प्रदर्शन करते हैं। वह कहता है, तो समझो कि जो लोग विश्वास करते हैं वे अब्राहम की संतान हैं।

यह दिलचस्प है। पौलुस यह नहीं कहता कि जो लोग विश्वास करते हैं वे वे राष्ट्र हैं जो अब्राहम के द्वारा धन्य हैं। वह वास्तव में उन्हें अब्राहम की संतान कहता है।

लेकिन बाद में, वह पद 16 में कहेगा कि अब्राहम की वाचा के वादे अब्राहम और उसके वंश से कहे गए थे। उत्पत्ति 12 से 22 का संदर्भ देते हुए। और फिर पौलुस कहता है, शास्त्र यह नहीं कहता कि वंश से, जिसका अर्थ बहुत से लोग हैं, बल्कि, और तेरे वंश से, जिसका अर्थ एक व्यक्ति है जो मसीह है।

अब, चाहे हम पॉल द्वारा यहाँ किए जा रहे कार्य को कितनी भी अच्छी तरह से समझाएँ, लेकिन मैं केवल यही कहना चाहता हूँ कि पॉल अब्राहमिक वादों को स्पष्ट रूप से देखता है, एक वंश का वादा जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरा हो रहा है, जो कि हमने मत्ती अध्याय एक और पद एक में देखा था, उसके अनुरूप है। तो अब अब्राहमिक वाचा की आशीर्षे यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से राष्ट्रों तक पहुँचेंगी, जो अब्राहम का सच्चा वंश है। अब, अगले भाग में, हम पुराने नियम की वाचाओं को देखना जारी रखेंगे और देखेंगे कि वे नए नियम में कैसे पूरी होती हैं, और अपना अधिकांश समय नई वाचा पर बिताएँगे।

लेकिन अब्राहमिक वाचा के बारे में हमें एक और बात कहने की ज़रूरत है कि अब्राहमिक वाचा भी लोगों में ही पूरी होती है। इसलिए, यीशु मसीह न केवल अब्राहम का वंश है, बल्कि उसके अनुयायी भी अब्राहम के सच्चे वंश बन जाते हैं। जैसा कि हम पहले ही गलातियों तीन की सातवीं आयत में कह चुके हैं, पौलुस उन्हें अपने पाठक, अब्राहम की संतान कहता है।

अतः अगले भाग में हम बाइबल की अन्य वाचाओं पर विचार करेंगे और देखेंगे कि वे मसीह और नये नियम में किस प्रकार पूर्ण होती हैं।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर दिए गए व्याख्यान हैं। यह सत्र 9, वाचा, पुराना नियम और नया नियम, भाग 1 है।